Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com
ISSN:2584-105X Pg. 156 - 159

उराँव समुदाय में करम पर्व

जगदीश उराँव
शोधार्थी
विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।
jagdishoraon783@gmail.com

Received: 18/06/2025
Accepted: 19/06/2025
Published: 20/06/2025

सारांश

झारखण्ड प्रदेश अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ निवास करने वाला उराँव आदिवासी समुदाय प्रकृति के गहरे अनुयायी हैं। उनके लिए प्रकृति पूजा मात्र धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि जीवन शैली है। प्रकृति के प्रति आदर की यह भावना उनके पारंपरिक त्योहारों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इन्हीं त्योहारों में से एक प्रमुख त्योहार "करम पर्व" है, जिसे भादो महीने के शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन भाई-बहन के प्रेम के प्रतीक के रूप में पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाता है।

यह पर्व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, परिवार और समाज के बीच सामंजस्य तथा सांस्कृतिक एकता की भावना को मजबूती प्रदान करता है। करम पर्व की प्रमुख विशेषता है—"करम डाली" और "जवा फूल" की विधिवत पूजा। इस उत्सव में नृत्य-संगीत, लोकगीत एवं सामूहिक सहभागिता विशेष आकर्षण होते हैं। पर्व की मुख्य कथा करमा और धरमा नामक सात भाइयों तथा उनकी बहन करमी के जीवन पर आधारित है, जो विनम्रता और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देती है।

यह आलेख झारखण्ड के उराँव समुदाय के सांस्कृतिक जीवन, प्रकृति के साथ उनके गहरे रिश्ते तथा पारंपरिक पर्वों की महत्ता को स्पष्ट करता है। करम पर्व के माध्यम से आदिवासी समाज का प्रकृति संरक्षण एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण आज भी प्रासंगिक और अनुकरणीय है।

***Keywords**: करम पर्व, उराँव समुदाय, प्रकृति पूजा, आदिवासी संस्कृति, जवा फूल.*

झारखण्ड की संस्कृति और प्रकृति की सुन्दरता पूरे देश में एक अलग स्थान रखती है। उराँव समुदाय में करम पर्व का एक अलग ही स्थान है। पहाड़-पर्वत, जंगल-झाड़, पेड़-पौधे, नदी-नाले-झरने आदि मन को मोह लेती हैं। यहां पर रहने वाले आदिवासियों की मुख्य भावना और उच्च-विचार तथा अच्छे संस्कार देखने को मिलते हैं। आदिवासी प्रकृति पूजक हैं एवं ये पुरखा समय से ही जाने एवं महसूस किए कि - प्रकृति है तभी हम हैं, यह पूरा संसार है। इसीलिए ये प्राचीन काल से ही प्रकृति के अनुरूप चलते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का उतना ही प्रयोग करते हैं, जितना जरूरी है।

करम पूजा उराँव समुदाय का प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह पर्व भादो महीने के शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व को मनाये जाने का मुख्य उद्देश्य है- बहन द्वारा भाई की सुख-सम्पन्नता की कामना करना। इसीलिए इसे भाई-बहन का त्योहार भी कहा जाता है। यह पर्व झारखण्ड प्रदेश के अलावा जहां कहीं भी उराँव समुदाय के लोग निवास करते हैं जैसे - बिहार, बंगाल, असम, ओड़िसा, छत्तीसगढ़, दिल्ली, चेन्नई आदि एवं भारत देश से बाहर नेपाल जैसे देशों में भी पूरे हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

आज पूरे विश्व के वैज्ञानिकों ने माना है कि - जंगल-झाड़, नदी-नाले, झरने, पेड़-पौधे इत्यादि हमारे जीवन का अटूट हिस्सा हैं। पेड़-पौधे पर्यावरण को संतुलित रखते हैं। इससे समय पर वर्षा होती है। इसके बिना हमारा जीवन असंभव है, क्योंकि प्रकृति के इन गुणों को पहचान कर इनकी रक्षा करनी होगी। आदिवासियों में हमेशा से वृक्ष-पूजा की यह प्रथा चली आ रही है। प्रकृति के प्रति आदिवासी समाज का यह परंपरा बहुत पुरानी है। पूर्वजों ने जब प्रकृति के उपकार को समझा तब वह इसके प्रति श्रद्धावनत हो उठे। आज भी इसकी प्रासंगिकता है। इसमें प्रकृति का संदेश निहित है। जैसे करम में करम डाली, सरहुल में सखुआ फूल की पूजा करते आ रहे हैं।

करम पर्व का प्रारंभ :-

करम पर्व का प्रारंभ भादो एकादशी पहुंचने से एक सप्ताह पहले ही जवा फूल रखने के लिए दिन का चुनाव करना होता है, अर्थात् करम पर्व के तीन, पाँच, सात, नौवा, ग्यारह दिनों के पहले युवतियाँ पर्व प्रारंभ करती हैं। जब युवतियाँ बालू उठाने के लिए नदी, तालाब या नाला की ओर जाती हैं। युवतियाँ नहा-धोकर एक टोकरी में बालू रखती हैं। उसमें तीन, पांच, सात प्रकार के अनाज बो देती हैं। जैसे- जौ, गेहूँ, मकई, आदि और घर के अंदर एक स्थान पर रख देती हैं एवं उसमें हल्दी पानी छिड़कती हैं। जिस दिन जवा उठाया जाता है उस रात गांव के सभी पीढ़ी के लोग माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन, बच्चे-बुजूर्ग सभी अखड़ा में अपने पारंपरिक वाद्य-यंत्र के साथ नृत्य-संगीत करते हैं। दूसरे दिन से बहन रोज धूप-धूवन द्वारा पूजा-अर्चना कर हल्दी पानी से सींचती है इसके बाद ही वे भोजन ग्रहण करती है। यह कार्य करम पूजा तक पूरे विधि-विधान के साथ चलते रहता है। दो-चार दिनों के बाद बीज अंकुरित हो जाता है, जिसे "जवा फूल" कहते हैं। इसी कारण इसे 'जवा पर्व' कह कर भी पुकार जाता है।

जवा उठाने के दिन सभी युवतियाँ एक-दूसरे का हाथ पकड़कर जवा उठाने के लिए जिस डउरी में बालू उठाती हैं, उसे एक जगह रख कर उसके चारों ओर वृत्ताकार पथ में गीत गाते हुए नृत्य करती हैं। गीत के बोल पूरे वातावरण में गूँज उठती है।

करम संजोत :-

उराँव समुदाय में करम पर्व से एक दिन पहले करम संजोत मनाया जाता है। करम संजोत के दिन पुरूष वर्ग के बड़े बच्चे, युवक, बुजुर्ग (जिस घर में जैसा व्यक्ति हों) नदी, तालाब, नाले की ओर जाकर मछली, केकड़ा आदि पकड़ कर लाते हैं और आपस में बराबरी बंटवारा करते हैं। जिस घर में पुरुष नहीं हैं, उन्हें भी उसी में से बंटवारा करके देते हैं। उसी को रात्रि में बनाकर खाना खाते हैं, जिसे करम संजोत मनाना कहते हैं। वर्तमान समय में लोग मुर्गा, मीठ आदि भी खाते हैं।

करम डाली काटना :-

करम पर्व के दिन शाम के समय करम डाली काटने जाने से पहले युवक अखड़ा में मांदर, नगाड़ा और घंट आदि वाद्य-यंत्र के साथ एकत्रीत होते हैं। इन वाद्य-यंत्र को कुछ देर तक अखड़ा में बजाते हैं, जिससे पता चलता है कि अब करम डाली काटने जाना है। वाद्य-यंत्र के बजने से युवतियों को भी पता चलता है और युवतियां भी लेण्डा फूल तोड़ने के लिए खेतों की ओर जाने की तैयारी करती हैं। लड़के करम डाली काटने के लिए चले जाते हैं और लड़कियां लेण्डा फूल तोड़ने खेतों की ओर चली जाती हैं। लड़के करम डाली काटने की जगह पहुँचते हैं। पाहन करम पेड़ की पूरे श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना करता है। उसके बाद पेड़ में चढ़कर तीन करम डाली काटता है। काटने से पूर्व पाहन सभी को अरवा चावल से पलटो-पलटो करने को कहता है। करम पेड़ के निचे जितने भी युवा होते हैं वे सभी अपने-अपने घर से अरवा चावल लाये होते हैं उसी से श्रद्धा पूर्वक पलटो-पलटो करते हैं। उन डालियों को पाहन काटकर निचे युवकों को पकड़ने के लिए गिराता है। युवक करम डाली को जमीन में गिरने से पहले ही पकड़ लेते हैं। यह भी ध्यान में रखा जाता है कि डाली जमीन पर न गिरे। करम डाली को उपवास किए युवक ही पकड़ सकते हैं। उन तीनों करम डाली को तीन अलग-अलग युवक पकड़ते हैं। एक युवक करम डाली को तीन साल या पांच साल तक ही पकड़ सकता है। इस तरह का नियम युवतियों में भी लागू होता है। करम डाली को काटकर पेड़ से उतरने के बाद पाहन के द्वारा करम पेड़ के निचे धूप-धुवन किया जाता है। उसके बाद सभी युवक करम पेड़ के चारों ओर गीत गाते हुए तीन या पांच चक्कर लगाते हैं उसके बाद करम टोंका (करम टांड़) की ओर जाते हैं। युवक वाद्य-यंत्र बजाते हुए नृत्य-संगीत करते हुए जाते हैं। करम टांड़ में बुजुर्ग महिला-पुरुष, बच्चे-बच्चियां भी पहुंचे होते हैं। खेत की ओर फूल तोड़ने गई युवतियां भी करम टोंका स्थल पर

पहुंचतीं हैं। एक तरह से कहा जा सकता है कि करम टोंका, करम डाली को अखड़ा में पहुंचाने से पहले का मिलन स्थान है। करम डाली को पकड़े युवक उस स्थान पर पहुंच कर पूरब की ओर मुंह करके खड़े हो जाते हैं। युवक और युवतियां दोनों की ओर से गीत के माध्यम से कहा-कही होते हैं। गीत इस प्रकार की होती है -

युवकों की ओर से -

पंपू तोक्ख केरकर पेल्लरो, - 2

ककड़ो लाता नु धार-मार मन्द्दर पेल्लारो -2

युवतियों की ओर से -

करम तरा केरकर जोंख़ारो -2

लकड़ा लाता नु धार-मार मन्द्दर जोंख़ारो -2

इसी तरह का गीत दोनों तरफ से चलता रहता है। इसी दौरान गांव की महिलाओं के द्वारा उस स्थान पर नेग भी होता रहता है। करम टोंका स्थान से करम डाली को अखड़ा तक पहुँचने के लिए युवतियों को पकड़ना होता है। इसीलिए जो युवक करम डाली को पकड़ कर पूरब मुंह करके खड़े हुए होते हैं, उन युवकों के पीछे करम डाली पकड़ने वाली तीन युवतियां पूरब मुंह करके खड़ी हो जाती है। उससे पहले अरवा चावल से करम गोसाईं को परीछण करके प्रणाम करती हैं साथ में उन तीनों लड़कों को भी प्रणाम करती हैं। इसके बाद लड़कियां लड़कों के पीछे जाकर खड़ी हो जाती हैं। तीनों युवक करम डाली को अपने सर के सीधे ऊपर उठाकर बिना पिछे की ओर देखे युवतियों को देते हैं। करम डाली को युवतियां पकड़ लेती हैं, उसके बाद लड़के पीछे मुड़कर करम गोसाईं (करम डाली) को प्रणाम करते हैं एवं तीनों लड़कियों को भी प्रणाम करते हैं। इसके बाद फिर नाचते-गाते हुए अखड़ा की ओर जाने लगते हैं। जो इस तरह की गीत को गाते हैं -

राजी नु राजी करम बरचा

हय एंगदा ड'उड़ागे चिं:ख़ी हो -2

बरना पेठ बर'आ चितो बिटी,

मडी मला घघेरन खेंदोन हो – 2

इस तरह का गीत गाते हुए अखड़ा तक नाचते-गाते हुए पहुंचाते हैं। अखड़ा में भी खूब नाच-गान चलता है।

करम डाली गाड़ना :-

करम गोसाई को अखड़ा में गाड़ने का समय क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होता है। कहीं पर शाम में, कहीं पर आधी रात में, तो कहीं पर सुबह में गाड़ा जाता है। करम गोसाई को गाँव के पाहन या बुजुर्ग व्यक्ति द्वारा अखड़ा के बीच में गड्ढा खोदकर नियम पूर्वक गाड़ा जाता है। उसके बाद उस जगह को गोबर से लिपाई की जाती है। उपवास युवतियाँ नया वस्त्र पहनकर नयी "करम डउड़ा" में पूजा सामग्री इत्यादि लेकर अखड़ा में करम पूजा के लिए आती हैं। वे करम राजा के चारों तरफ बैठकर करम देवता की आराधना करती है कि - हे करम राजा! मेरे भाई को सुख-समृद्धि देना। उसको कभी भी गलत रास्ते पर नहीं जाने देना। यहाँ पर बहन निर्मल विचार और त्याग की भावना को उजागर करती है। यहाँ भाई-बहन का असीम प्यार दिखाई देता है। यह पूजा गाँव का पाहन या बुजुर्ग व्यक्ति करवाता है।

करम की कथा :-

करम पूजा करने के लिए जब सभी लोग एकत्रित होते हैं उसी समय ही कथा कही जाती है। करम कहानी करमा और धरमा पूरे सात भाईयों की सुनाई जाती है। उन सात भाईयों में सबसे बड़ा का नाम करमा, उससे छोटा क्रमशः धरमा, धनी, मनी, मना, सेवा और रूपा था। सबसे छोटी बहन का नाम करमी था। सबों का विवाह हो चुका था। वे सभी अच्छी तरह से रहते थे। एक वर्ष अच्छी तरह वर्षा नहीं हुआ। खाने-पीने के लिए कुछ नहीं मिल रहा था। तब सातों भाई काम करने के लिए दूसरे प्रदेश गये। वे काम कर ठीक भादो एकादशी के दिन लौट रहे होते हैं, वे अपना सीमान पहुँचे। वहीं वे डेरा किये और सबसे बड़ा भाई करमा सबसे छोटा भाई को कहा- "जाओ भाई तुम अपने भाभी लोगों को बता देना की हम सब आ गये हैं। हमे वे परिछने अर्थात पवित्र करने के लिए आयेगें।" उस समय जो भी बाहर जाते थे वे कहीं भी खा-पी लेते थे। जिससे वे अपने आप को अपवित्र मानते थे। उनका विश्वास था कि उनके साथ किसी प्रकार का रोग, पाप गाँव प्रवेश न करे। यही सोचकर उन्हें पवित्र कर ही गाँव में प्रवेश करने दिया जाता था।

सबसे छोटा भाई उस स्थान से गांव गया। उसने देखा कि - उसके सभी भाभी और उसकी पत्नी गाँव के लोगों के साथ करम नाचने में व्यस्त हैं। छोटा भाई उन्हें देखकर वे भी करम खेलने में मस्त हो गया। वह भूल गया कि उसका भाई लोग भूखे प्यासे इन्तजार कर रहे हैं। इधर उसका भाई लोग उसके आने का आसरा देख रहे हैं, लेकिन वह नहीं आ रहा है। इंतजार कर रहे सभी भाई सोचने लगे कि वह किस लिए नहीं आ रहा है। इसी तरह से देखने के बाद दूसरा भाई को भेजा। वह भी गाँव जाकर देखा कि सभी कोई करम नाचने में मस्त हैं। वह भी करम नाचने में मस्त हो गया। इसी तरह करके पांच भाई चले आये परन्तु एक भी भाई वापस नहीं आया। अन्त में करमा ने धरमा को बोला - "भाई जाकर देखो तो! क्या हुआ जो कोई भाईनहीं लौट रहें हैं और हमारी पत्नियाँ भी हमें परिछने नहीं आ रही है।"

धरमा भी गया और देखा कि उनके सभी गोतनियाँ, गाँव के लोग और उनके भाई करम नाचने में मस्त हैं। धरमा भी देखा कि खूँटी में मान्दर टांगा हुआ है। उसने खूँटी से मांदर उतार कर अपने कंधे मांदर टांगा और करम नाचने में व्यस्त हो गया। वे सभी भूल गये कि बड़ा भाई करमा भूखे-प्यासे हमें इंतजार कर रहे हैं। करमा उनके नहीं आने से बहुत ही गुस्सा हुआ। वह बहुत जोर से गुस्सा गया। अन्त में गुस्साते हुए घर आया। देखा कि सभी करम खेलने में मस्त

हो गये हैं। उसे देखकर करमा, करम गोसाईं को उखाड़कर गोबर गड्ढ़ा में फेंक दिया। तब उसे सभी गोतनियाँ अच्छी तरह से उठाये और नदी में विर्सजन कर दिये। उसी दिन से करमा का किस्मत बिगड़ गया। उसके घर में खाने-पिने के लिए अच्छे से नहीं पुरने लगा। खेती भी करता तो उसका कुछ भी अच्छा नहीं होते। बाकी सभी भाइयों को सबकुछ एवं भरपूर खाने-पिने को पूरा होता।

एक दिन करमा ने अपने भाई के खेत में घुसकर धान के पौधों को बर्बाद करने के उद्देश्य से उखाड़ फेंका, लेकिन करम राजा की कृपा से खेत लहलहाने लगा। उखड़े हुए पौधे फिर से उग गये। यह देखकर करमा ने अपने भाई से अपनी करनी की कहानी सुनाई। भाई ने उदारतापूर्वक उसे करम की डाली गाड़कर भादों मास की एकादशी के दिन पूजा करने को कहा। करमा ने अनेक मुसीबतों को पार करते हुए करम डाल लेने के लिए नदी पार करके गया। वहाँ उसे करम राजा का साक्षात्कार हुआ और उसने उनके चरणों में गिर कर अपनी गलतियों के लिए क्षमा माँगा। उसे करम राजा का वरदान प्राप्त हुआ। उसके बाद करमा ने करम डाली को गाड़ कर श्रद्धा पूर्वक पूजा अर्चना की। इसके बाद उसके जीवन में खुशियाँ छा गयीं। उस दिन से करम पूजा की प्रथा चल पड़ी। ये सभी हमें घमण्ड त्याग कर विनम्र बनने की प्रेरणा देते हैं। इस तरह कथा अंत हो जाती है।

उसके बाद सभी युवतियाँ करम डाली को गले लगाती हैं। इसके बाद शुरू होता है, नृत्य का कार्यक्रम। नंगे पैरों में पूजा-स्थल के चारों ओर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर नृत्य करती हुई महिलाएँ अत्यंत आकर्षक प्रतीत होती हैं। भाद्रमास की एकादशी की शीतल चाँदनी और आकाश के बितान के नीचे नृत्य और संगीत का कार्यक्रम कुछ घंटे तक चलता है। करम बासी के दिन करम गोसाई की पूजा एवं कुछ देर नृत्य संगीत अखड़ा में करने के बाद करम राजा को नेग-नियम के साथ उखाड़ा जाता है। करम उखाड़ने के बाद उसे गांव में घर-घर घुमाया जाता है। उस समय इस प्रकार की गीत भी गाती एवं घर के आँगन में नृत्य भी करती हैं। गीत इस प्रकार है –

साल भईर नु जवा पूंप बरचा,

ओन्दा ददा झोकोय का मला रे-2

मया लगो झोकोय ददा,

मल मया लगो मला झोकोय रे-2

इसके बाद सभी युवक-युवतियाँ, बच्चे-बुजुर्ग एकजूट होकर विसर्जन के लिए करम डाली को लेकर नाचते-गाते नदी या तालाब की ओर जाते हैं। नदी या तालाब के पास पहुँच कर बिसर्जन गीत गातें हैं –

नेतेक दिना रहले करम खुंटा उपरे-2

आज तो आले करम गंगा नहाय-2

इस तरह से गीत गाकर और नृत्य करके करम डाली को नदी, तालाब या नाला में विसर्जन कर देती हैं। यह पर्व हमारे जीवन में आपसी संबंध को जोड़ती है। करम में ही घर, खेत-बारी में भेलवा, करम, सिन्दावर आदि की डाली को गाड़ा जाता है। जिससे यह मानना है कि ऐसा करने से फसलों में कीड़े नहीं लगते, जिसके कारण पैदवार अच्छी होती है। इस तरह से आस्था, विश्वास, सामाजिक, सांस्कृतिक, कृषि एवं प्रकृति से जुड़ा यह महान पर्व करम है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. कुँड़ुख़ लोक साहित्य - संपादक - डॉ हरि उराँव 2013, पृष्ठ संख्या 185

2. उराँव लोक साहित्य - डॉ. तेतरू उराँव 2021, पृष्ठ संख्या 239, 240

3. सरना फूल पत्रिका अंक 35, पृष्ठ संख्या 23, 24, 25

साक्षात्कार -

1. श्री बिजेंद्र उराँव, उम्र - 48 वर्ष, ग्राम - बारी, पोस्ट - बारी, थाना - चन्दवा, जिला - लातेहार झारखण्ड।

2. श्री रमेश उराँव, उम्र - 54 वर्ष, ग्राम - बारी, पोस्ट - बारी, थाना - चन्दवा, जिला - लातेहार झारखण्ड।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****